d{kk & VII

पाठ 4	प्रत्यय और कारक	28
पाठ 5	सद्वचन	38
पाठ 6	नीतिज्ञ चाणक्य	48
पाठ 7	विद्या के महत्त्व पर सम्भाषण	55

4

iR;; vkSj dkjd

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने सुभाषित वचनों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का जीवन में महत्त्व के विषय में जाना। इस पाठ में आप प्रत्ययों तथा कारक के विषय में पढेंगे। "प्रतीयते विधीयते इति प्रत्ययः" अर्थात् प्रत्यय पद के अन्त में जुडकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते है– प्रथम जो धातु से होते हैं, दुसरे जो पदों से होते हैं। धातु से होने वाले प्रत्ययों को कृत् तथा शब्दों से होने वाले प्रत्ययों को तद्धित कहते है। इस पाठ में हम कृत् प्रत्ययों के विषय में पढ़ेंगे।

संस्कृत भाषा में छः कारक माने गये हैं। क्रिया की जनकता को कारक कहा जाता है। इस अध्याय में कृत् प्रत्ययों तथा कारक के विषय में सामान्य रूप से बताया जायेगा।

mìs';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- संस्कृत भाषा में कृत्प्रत्ययों का प्रयोग कर पाने में;
- संस्कृत में कारक को समझ पाने में; और
- इनके प्रयोग से संस्कृत में सरल वाक्यों का प्रयोग कर पाने में।

4.1 ÑRiR;;

धातुऔं अर्थात् क्रियापदों के साथ जुडने वाले प्रत्ययों को कृत्प्रत्यय कहते हैं। इनसे बनने वाले पद कृदन्त कहलाते हैं। धातुओं से होने वाले प्रत्यय तिङ् संबधित व तिङ भिन्न रूप से दो प्रकार के होते है। यहाँ पर नीचे दिये गये तीन प्रत्ययों का अध्ययन हम उदाहरणों के द्वारा करेंगें।

1. क्त–प्रत्ययः 2. क्तवतु प्रत्ययः 3. तव्य प्रत्ययः

1- Dr & çR;;%

/kkrq%	çR;;%	iq-	L=h-	u-iq-
१. गम् +	क्त –	गतः	गता	गतम्
२. दृश् +	क्त –	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्
३. पठ् +	क्त –	पठितः	पठिता	पठितम्
४. खाद् +	क्त –	खादितः	खादिता	खादितम्
५. हस् +	क्त –	हसितः	हसिता	हसितम्

2- Drorq çR;;%

/kkrq%	çR;;%	iq-	L=h-	u-iq-
१. गम् +	क्तवतु –	गतवान्	गतवती	गतवत्
२. पठ् +	क्तवतु –	पठितवान्	पठितवती	पठितवत्
३. दृश् +	क्तवतु –	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्
४. धाव् +	क्तवतु –	धावितवान्	धावितवती	धावितवत्
५. श्रु +	क्तवतु –	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्

3- rO;&çR;;%

/kkrq%	çR;;%	iq-	L=h-	u-iq-
१. पठ् +	तव्य–	पठितव्यः	पठितव्या	पठितव्यम्
२. श्रु +	तव्य–	श्रोतव्यः	श्रोतव्या	श्रोतव्यम्
३. दृश् +	तव्य–	द्रष्टव्यः	द्रष्टव्या	द्रष्टव्यम्
४. गम् +	तव्य–	गन्तव्यः	गन्तव्या	गन्तव्यम्
५. लिख् +	तव्य–	लेखितव्यः	लेखितव्या	लेखितव्यम्

4.2 dkjd

क्रियान्वयि कारकम्। क्रियायाः अन्वयः – क्रियान्वयः। अन्वयः सम्बन्धः। क्रियान्वयः अस्य अस्ति इति क्रियान्वयि। यः क्रियया अन्वेति (सम्बन्धं प्राप्नोति) सः कारकम् इत्युच्यते इति अर्थः।

इदं च कारकं षड्विधम्। कर्तृकारकं, कर्मकारकं, करणकारकं, सम्प्रदानकारकं, अपादानकारकं, अधिकरणकारकमिति।

जिसका क्रिया के साथ संबंध होता है उसे कारक कहते है। अर्थात क्रिया के जनक को कारक कहते हैं – क्रियाजनकत्वं कारकम्।

कारक छः प्रकार के होते है –

(i). कर्ताकारकम्,

(ii). कर्मकारकम्,

(iii). करणकारकम्,

(iv). सम्प्रदानकारकम्,

(v). अपादानकारकम् और

(vi). अधिकरणकारकम्।

कर्ताकारकम् – पाचकः पचति।

अत्र पाचकः पाकक्रियायाम् अन्वेति। स च कर्तृ। अतः पाचकः कारकम्।

कर्मकारकम् – गां स्पृशति।

अत्र गौः स्पर्शनक्रियायाम् अन्वेति। सा च कर्म। अतः सा कारकम् ।

करणकारकम् – परशुना छिनत्ति।

अत्र परशुः छेदनक्रियायाम् अन्वेति। स च परशुः करणं(साधनम्) अतः परशुः कारकम्।

सम्प्रदानकारकम्–बालाय फलं ददाति।

अत्र बालः दानक्रियायाम् अन्वेति। अतः बालः कारकम्।

अपादानकारकम्– प्रासादात् पतति।

अत्र प्रासादः पतनक्रियायाम् अन्वेति। अतः प्रासादः कारकम्। तच्च अपादानकारकम्।

अधिकरणकारकम्– पीठे उपविशति।

अत्र पीठम् उपवेशनक्रियायां अन्वेति। तच्च अधिकरणम्। अतः पीठं कारकम्।

foHkfä%	dkjdEk	inkfu
प्रथमा	कर्तृकारकम्	नामपदम्. क्रियापदम्
द्वितीया	कर्मकारकम्	प्रति, परितः, उभयतः, सर्वतः, अधि,विना
तृतीया	करणकारकम्	विना, सह, साकम्, सार्धम्, समम्, सदृ षम्, अलम्
चतुर्थी	सम्प्रदानकारकम्	दा–धातु, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, अलम्
पञ्चमी	अपादानकारकम्	बहिः, पृथक, भयम्, भीतिः,
षष्ठी	सम्बन्धः	पुरतः, पृष्ठतः, दक्षिणतः, वामतः, उपरि, अधः
सप्तमी	अधिकरणकारकम्	कुशलः, पण्डितः, निपुणः

ikBxr iz'u& 4-1

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. गतवान् इति पदं किं प्रत्यय प्रयुक्तम्।

2. खादितः कः धातुः।

3. "लेखितव्या" अत्र कः प्रत्ययः?

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. कारकं नाम ______________ ।

2. कारकं ______________ विधम् ।

3. बालः पठति इति ______________ कारकम्।

vkius D;k lh[kk\

- कृत्प्रत्ययों का अर्थ और प्रयोग।
- कारक परिचय।
- कारक के अनुसार वाक्यों का निर्माण।

ikBkr i'u

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिए।

    (i). सम्प्रदानकारकस्य उदाहरणं लिखत।

    (ii). "पुरुषाय वाहनं ददाति" अत्र किं कारकम्।

    (iii). करणकारकस्य उदाहरणं लिखत।

    (iv). पञ्चवाक्यैः कारकस्य विषये लिखत।

2. निम्नलिखित कृत् प्रत्यय आधरित धातु–पदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत मे वाक्यों का निर्माण कीजिए–

    (i). गतः

    (ii). गता्

    (iii). गतम्

    (iv). पठितः

    (v). खदिता

    (vi). दृष्टम्

    (vii). हसितम्

    (viii). हसिता

    (ix). दृष्टः

3. निम्नलिखित क्तवतु प्रत्यय आधरित धातु–पदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत मे वाक्यों का निर्माण कीजिए–

(i). गतवान्

(ii). गतवत्

(iii). गतवती

(iv). श्रुतवत्

(v). श्रुतवती

(vi). श्रुतवान

(vii). दृष्टवती

(viii). दृष्टवत्

(ix). पठितवत्

(x). पठितवती

4. निम्नलिखित तत्य प्रत्यय आधरित क्रियापदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत मे वाक्यों का निर्माण कीजिए–

(i). लेखितव्यः

(ii). लेखितव्या

(iii). गन्तव्यम्

(iv). गन्तव्यः

(v). पठितव्या

(vi). पठितव्यम्

(vii). श्रोतव्यः

(viii). श्रोतव्यम्

(ix). लिखितव्यः

(x). लिखितव्या

mÙkjekyk

4.1

I.

1. क्तवतु
2. खाद्
3. तव्य

II.

1. क्रियान्वयी
2. षड्
3. कर्तृ